(ब) काव्य बोध

1. रस

परिभाषा—काव्य में रस का अर्थ है 'आनन्द की प्राप्ति'। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि पढ़ने-सुनने या देखने से पाठक को एक प्रकार के विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है, उसे रस कहते हैं।

काव्यास्वादन के अनिर्वचनीय आनन्द को रस कहा गया है।

रस काव्य की आत्मा है, काव्य का प्राण है। रस की अनुभूति के समय मन आनन्द से परिपूर्ण हो जाता है।

रस निष्पत्ति विषयक भरतमुनि का सूत्र ध्यान देने योग्य है—

"विभावानुभाव संचारी संयोगाद्रस निष्पतिः"

अर्थात् विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

रस के अंग—रस के चार अंग हैं—

1. स्थायी भाव, 2. संचारी भाव, 3. अनुभाव, 4. विभाव।

1. स्थायी भाव—सहृदय (रसिक या सामाजिक या दर्शक या पाठक) के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं अर्थात् चिरकाल तक चित्त में स्थिर रहते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहते हैं। इन्हें छिपाया नहीं जा सकता। इनके स्वरूप में परिवर्तन नहीं होता। दस रसों की तरह स्थायी भाव भी दस माने गये हैं।

रस के प्रकार	स्थायी भाव
1. शृंगार रस	रति, प्रेम
2. हास्य रस	हँसी
3. रौद्र रस	क्रोध
4. भयानक रस	भय
5. वीर रस	उत्साह
6. अद्‌भुत रस	आश्चर्य / विस्मय

Scanned with CamScanner

7. करुण रस	करुणा, शोक
8. वीभत्स रस	घृणा
9. शान्त रस	वैराग्य
10. वात्सल्य रस	स्नेह।

2. संचारी भाव—आश्रय के चित्त में जल्दी-जल्दी उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। जैसे—भयभीत के मन में उत्पन्न चिन्ता, शंका, त्रास, मोह, जड़ता, उन्माद आदि भाव संचारी भाव कहलाते हैं।

संचारी भावों की संख्या वैसे तो असंख्य मानी जाती है, किन्तु मुख्यत: उसकी संख्या 33 मानी गयी है, जो निम्नलिखित हैं—निर्वेद, ग्लानि, मद, स्मृति, शंका, आलस्य, चिन्ता, दीनता, मोह, चपलता, हर्ष, धृति, त्रास, उग्रता, उन्माद, असूया, श्रम, क्रीड़ा, आवेग, गर्व, विषाद, औत्सुक्य, निद्रा, अपस्मार, स्वप्न, विबोध, अवमर्ष, अवहित्था, मति, व्याधि, मरण, वितर्क, जड़ता।

3. अनुभाव—आश्रय की बाहरी चेष्टाओं को अनुभाव कहते हैं। यथा—भालू से भयभीत व्यक्ति का काँपना, चीखना, हाथ-पाँव मारना, भागने की चेष्टा करना आदि अनुभाव के उदाहरण हैं।

वाणी तथा अंग संचालन आदि की जिन क्रियाओं से आलम्बन तथा उद्दीपन आदि के कारण आश्रय के हृदय में जाग्रत भावों का साक्षात्कार होता है, वह व्यापार ही अनुभाव कहलाता है।

अनुभाव के भेद—इसके प्रमुख चार भेद हैं— (i) कायिक, (ii) मानसिक, (iii) आहार्य, (iv) सात्विक।

4. विभाव—स्थायी भाव के कारण को विभाव कहते हैं अथवा वे परिस्थितियाँ जिनके कारण स्थायी भाव जाग्रत होते हैं, उन्हें विभाव कहते हैं अथवा जो व्यक्ति अथवा वस्तु अन्य व्यक्ति के हृदय में भावों का **उद्रेक** करती है, उन भावों के **उद्रेक** के कारणों को विभाव कहते हैं।

रस की उत्पत्ति—सहृदय के हृदय में स्थित स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के साथ संयोग हो जाता है तो वह (स्थायी भाव) रस का रूप ग्रहण कर लेता है। रस उत्पत्ति के सिद्धान्त को निम्नलिखित सूत्र के द्वारा समझा जा सकता है—

$$\text{सहृदय का स्थायी भाव} + \left.\begin{matrix}\text{विभाव}\\ \text{अनुभाव}\\ \text{संचारी भाव}\end{matrix}\right\} = \text{रस}$$

रसों के भेद

1. शृंगार रस—जहाँ स्त्री-पुरुष के प्रेम भाव का वर्णन किया जाता है, वहाँ शृंगार रस होता है। इसका स्थायी भाव रति है।

शृंगार रस के दो प्रकार—

(i) संयोग शृंगार—जहाँ स्त्री-पुरुष के मिलन का वर्णन होता है वहाँ संयोग शृंगार होता है।

उदाहरण—राम के रूप निहारति जानकी, कंकन के नग की परछाहीं।

(ii) वियोग शृंगार—जहाँ स्त्री-पुरुष के मध्य वियोग का वर्णन होता है, वहाँ वियोग शृंगार रस होता है।

उदाहरण— मधुवन तुम कत रहत हरे।
विरह-वियोग श्याम सुन्दर के, ठाढ़े क्यों न जरे ?

2. हास्य रस—जब किसी की विचित्र वेशभूषा, हावभाव देखकर या वर्णन सुनकर हँसी आती हो, वहाँ हास्य रस होता है।

उदाहरण— इस दौड़-धूप में क्या रखा आराम करो, आराम करो।
आराम जिन्दगी की कुंजी, इससे न तपेदिक होती है।
आराम सुधा की एक बूँद, तन का दुबलापन खोती है।
इसलिए तुम्हें समझाता हूँ, मेरे अनुभव से काम करो।

Scanned with CamScanner

3. रौद्र रस—इसका स्थायी भाव क्रोध है। विरोधियों के द्वारा जब कोई अनुचित कार्य होता है तब आश्रय के मन में रौद्र रस की उत्पत्ति होती है।

उदाहरण— कहा कैकयी ने सक्रोध दूर हो दूर अरे निर्लज्ज।
सामने से हट, अधिक न बोल द्वि जिह्वे! रस में विष मत घोल।

4. भयानक रस—इसका स्थायी भाव भय है। किसी वस्तु या व्यक्तियों अथवा घटनाओं से भय उत्पन्न हो, वहाँ भयानक रस होता है—

उदाहरण—उधर गरजती सिंधु लहरियाँ, कुटिल काल के जालों सी।
चली आ रही, फेन उगलती, फन फैलाये व्यालों सी॥

5. वीर रस—इसका स्थायी भाव उत्साह है। जहाँ कविता में किसी व्यक्ति के उत्साह का वर्णन हो तो वहाँ वीर रस होता है।

उदाहरण— बुंदेले हर बोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

6. अद्‌भुत रस—स्थायी भाव आश्चर्य या विस्मय है। किसी आश्चर्यजनक वस्तु या घटना को देखकर व्यक्ति के मन में विस्मय जाग्रत हो वहाँ अद्‌भुत रस होता है।

उदाहरण—बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिन वाणी वक्ता बड़ जोगी॥

7. करुण रस—इसका स्थायी भाव शोक है, जहाँ मृत्यु तुल्य वियोग का वर्णन होता है। वहाँ करुण रस होता है।

उदाहरण—अभी तो मुकुट बँधा था माथ,
हुए कल ही हल्दी के हाथ।
हाय रुक गया यही संसार,
बना सिन्दूर अंगार॥

8. वीभत्स रस—स्थायी भाव घृणा या जुगुप्सा है। घृणा को उत्पन्न करने वाले दृश्यों का वर्णन होने पर वीभत्स रस होता है।

उदाहरण—सिर पर बैठ्यो काग,
आँखि दोऊ खात निकारत।
खींचहि जीभहिं सियार,
अतिहिं आनन्द उर धारत॥

9. शांत रस—इसका स्थायी भाव निर्वेद या वैराग्य है। जहाँ सांसारिक वस्तुओं से विरक्ति का वर्णन हो वहाँ शांत रस होता है।

उदाहरण—सुन मत मूढ़! सिखावन मेरो।
हरि-पद विमुख लह्यो न काहू सुख सठ।
यह समुझ सबेरो।

10. वात्सल्य रस—बच्चों की चेष्टाओं से माता-पिता के हृदय में जिस भाव की उत्पत्ति होती है, उसे वात्सल्य रस कहते हैं।

उदाहरण— कबहुँ ससि माँगत आरि करै,
कबहुँ प्रतिबिम्ब निहारि डरै।
कबहुँ करताल बजाय कै नाचत,
मातु सबै मन मोद भरै॥

Scanned with CamScanner

परिभाषा

सहृदय के हृदय में स्थित ___ नामक स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव से संयोग हो जाता है उसे ___ रस कहते है ।

उदा० —

Scanned with CamScanner